وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى

मुर्दे	और उन से बातें करते	फ़रिश्ते	उन की तरफ़	उतारते	हम	और अगर

وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا اِلَّآ اَنْ

यह कि	मगर	वह ईमान लाते	न	सामने	हर शै	उन पर	और हम जमा कर देते

يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ ﴿١١١﴾ وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ

हर नबी के लिए	हम ने बनाया	और इसी तरह	111	जाहिल (नादान) हैं	उन में अक्सर	और लेकिन	चाहे अल्लाह

عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ

बाज़	तरफ़	उन के बाज़	डालते हैं	और जिन	इन्सान	शैतान (जमा)	दुश्मन

زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۭ وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ

पस छोड़ दें उन्हें	वह न करते	तुम्हारा रब	चाहता	और अगर	बहकाने के लिए	बातें	मुलम्मा की हुई

وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	दिल (जमा)	उस की तरफ़	और ताकि माइल हो जाएं	112	वह झूट घड़ते हैं	और जो

بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ

तो क्या अल्लाह के सिवा	113	बुरे काम करते हैं	वह	जो	और ताकि वह करते रहें	और ताकि वह उस को पसन्द करलें	आख़िरत पर

اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ

मुफ़स्सिल (वाज़ेह)	किताब	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की	जो-जिस	और वह	कोई मुन्सिफ़	मैं ढूंढूँ

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ

तुम्हारा रब	से	उतारी गई है	कि यह	वह जानते हैं	किताब	हम ने उन्हें दी	और वह लोग जिन्हें

بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ

तेरा रब	बात	और पूरी है	114	शक करने वाले	से	सो तुम न होना	हक़ के साथ

صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾

115	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	उस के कलिमात	नहीं बदलने वाला	और इन्साफ़	सच

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का रास्ता	से	वह तुझे भटका देंगे	ज़मीन में	जो	अक्सर	तू कहा माने	और अगर

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾ اِنَّ رَبَّكَ

तेरा रब	बेशक	116	अटकल दौड़ाते हैं	मगर	वह	और नहीं	गुमान	मगर (सिर्फ़)	पैरवी करते	नहीं

هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿١١٧﴾

117	हिदायत याफ़्ता लोगों को	ख़ूब जानता है	और वह	उस का रास्ता	से	बहकता है	जो	ख़ूब जानता है	वह

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118	ईमान वाले	उस की आयतों पर	तुम हो	अगर	उस पर	अल्लाह का नाम	लिया गया	उस से जो	सो तुम खाओ

और अगर हम उन की तरफ़ फ़रिश्ते उतारते, और उन से मुर्दे बातें करते, और हम जमा कर देते उन पर (उन के सामने) हर चीज़ तो भी वह ईमान न लाते मगर यह कि अल्लाह चाहे, और लेकिन उन में अक्सर नादान हैं। (111)

और इसी तरह हम ने हर नबी के लिए इन्सानों और जिनों के शयातीन को दुश्मन बना दिया, एक दूसरे की तरफ़ मुलम्मा की हुई बातें बहकाने के लिए इलक़ा करते रहते हैं, और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह ऐसा न करते, पस उन्हें छोड़ दें (उस के साथ) जो वह झूट घड़ते हैं। (112)

और ताकि उन लोगों के दिल उस की तरफ़ माइल हो जाएं जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और ताकि वह उस को पसन्द करें, और ताकि वह करते रहें जो वह बुरे काम करते हैं। (113)

क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और मुन्सिफ़ ढून्डूँ? और वही है जिस ने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सिल (वाज़ेह) किताब नाज़िल की है, और जिन्हें हम ने किताब दी है (अहले किताब) वह जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ उतारी गई है, सो तुम शक करने वालों में से न होना। (114)

और कामिल है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ के ऐतिबार से, उस के कलिमात को कोई बदलने वाला नहीं, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (115)

और ज़मीन मे अक्सर (ऐसे हैं) अगर तू उन का कहा माने तो वह तुझे अल्लाह के रास्ते से भटका देंगे, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान की, और वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (116)

बेशक तेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो बहकता है उस के रास्ते से, और वह हिदायत याफ़्ता लोगों को ख़ूब जानता है। (117)

सो तुम उस में से खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया अगर तुम उस की आयतों पर ईमान रखते हो। (118)

और तुम्हें क्या हुआ कि तुम उस में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है हालांकि वह तुम्हारे लिए वाज़ेह कर चुका है जो उस ने तुम पर हराम किया है मगर यह कि तुम लाचार हो जाओ, और बहुत से (लोग) अपनी ख़ाहिशात से इल्म (तहक़ीक़) के बग़ैर गुमराह करते हैं, बेशक तुम्हारा रब हद से बढ़ने वालों को खूब जानता है। (119)

और छोड़ दो खुला गुनाह और छुपा हुआ, बेशक जो लोग गुनाह करते हैं अ़नक़रीब उस की सज़ा पालेंगें जो वह बुरे काम करते थे। (120)

और उस से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम नहीं लिया गया और बेशक यह गुनाह है, और बेशक शैतान अपने दोस्तों के (दिलों मे वस्वसा) डालते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें, और अगर तुम ने उन का कहा माना तो बेशक तुम मुश्रिक होगे। (121)

क्या (वह शख़्स) जो मुर्दा था फिर हम ने उस को ज़िन्दा क्या और हम ने उस के लिए नूर बनाया, वह चलता है उस (नूर की रौशनी) से लोगों में, (क्या) उस जैसा हो जाएगा जो अन्धेरों में है? उस से निकलने वाला नहीं, इसी तरह काफ़िरों के लिए उन के अ़मल ज़ीनत दिए गए। (122)

और इसी तरह हम ने हर बस्ती में बनाए उस के बड़े मुज्रिम ताकि वह उस में मकर करें, और वह मकर नहीं करते मगर अपनी जानों पर, (अपनी ही जानों पर चालें चलते हैं), ओर वह शऊर नहीं रखते। (123)

और जब उन के पास कोई आयत आती है तो कहते हैं कि हम हरगिज़ न मानेंगे जब तक हमें उस जैसा न दिया जाए जो अल्लाह के रसूलों को दिया गया, अल्लाह खूब जानता है कि अपनी रिसालत कहां भेजे, अ़नक़रीब उन लोगों को पहुँचेगी जिन्हों ने जुर्म किया, अल्लाह के हाँ ज़िल्लत और सख़्त अ़ज़ाब, उस का बदला कि वह मक्र करते थे। (124)

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ

हालांकि वह वाज़ेह कर चुका है	उस पर	नाम अल्लाह का	लिया गया	उस से जो	कि तुम न खाओ	और क्या हुआ तुम्हें

لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ كَثِيْرًا

बहुत से	और बेशक	उसकी तरफ़ (उस पर)	तुम लाचार हो जाओ	जिस	मगर	तुम पर	जो उस ने हराम किया	तुम्हारे लिए

لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

खूब जानता है	वह	तेरा रब	बेशक	इल्म के बग़ैर	अपनी ख़ाहिशात से	गुमराह करते हैं

بِالْمُعْتَدِيْنَ ﴿١١٩﴾ وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	और उस का छुपा हुआ	खुला गुनाह	और छोड़ दो	119	हद से बढ़ने वालों को

يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ﴿١٢٠﴾ وَلَا تَاْكُلُوْا

और न खाओ	120	वह बुरे काम करते	थे	उस की जो	अ़नक़रीब सज़ा पाएंगे	गुनाह	कमाते (करते) हैं

مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	और बेशक	अलबत्ता गुनाह	और बेशक यह	उस पर	अल्लाह का नाम	नहीं लिया गया	उस से जो

لَيُوْحُوْنَ اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ۚ وَاِنْ اَطَعْتُمُوْهُمْ اِنَّكُمْ

तो बेशक तुम	तुम ने उन का कहा माना	और अगर	ताकि वह झगड़ा करें तुम से	अपने दोस्त	तरफ़ (में)	डालते हैं

لَمُشْرِكُوْنَ ﴿١٢١﴾ ع اَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَاَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا ع ١٤ ١١

नूर	उस के लिए	और हम ने बनाया	फिर हम ने उस को ज़िन्दा किया	मुर्दा था	क्या जो	121	मुश्रिक होगे

يَّمْشِيْ بِهٖ فِى النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِى الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ

निकलने वाला	नहीं	अन्धेरे	में	उस जैसा जो	लोग	में	उस से	वह चलता है

مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	122	जो वह करते थे (अ़मल)	जो	काफ़िरों के लिए	ज़ीनत दिए गए	इसी तरह	उस से

جَعَلْنَا فِىْ كُلِّ قَرْيَةٍ اَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا

और नहीं	उस में	ताकि वह मकर करें	उस के मुज्रिम	बड़े	बस्ती	हर	में	हम ने बनाए

يَمْكُرُوْنَ اِلَّا بِاَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٢٣﴾ وَاِذَا جَآءَتْهُمْ

उन के पास आती है	और जब	123	वह शऊर रखते	और नहीं	अपनी जानों पर	मगर	वह मकर करते

اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ رُسُلُ اللّٰهِ ؔ وقف لازم وقف منزل

अल्लाह	रसूल (जमा)	दिया गया	उस जैसा जो	हम को दिया जाए	जब तक	हम हरगिज़ न मानेंगे	कहते हैं	कोई आयत

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا

उन्हों ने जुर्म किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगी	अपनी रिसालत	रखे (भेजे)	कहाँ	खूब जानता है	अल्लाह

صَغَارٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ ﴿١٢٤﴾

124	वह मक्र करते थे	उस का बदला	सख़्त	और अ़ज़ाब	अल्लाह के हाँ	ज़िल्लत

فَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ ۚ

इस्लाम के लिए	उस का सीना	खोल देता है	कि उसे हिदायत दे	अल्लाह चाहता है	पस जिस

وَمَنْ يُّرِدْ اَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَاَنَّمَا

गोया कि	भींचा हुआ	तंग	उस का सीना	कर देता है	उसे गुमराह करे	कि	चाहता है	और जिस

يَصَّعَّدُ فِى السَّمَآءِ ۭ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللّٰهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ

जो लोग	पर	नापाकी (अ़ज़ाब)	कर देता है (डाले गा) अल्लाह	इसी तरह	आस्मानों में-आस्मान पर	ज़ोर से चढ़ता है

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢٥﴾ وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ۭ قَدْ فَصَّلْنَا

हम ने खोल कर बयान कर दी हैं	सीधा	तुम्हारा रब	रास्ता	और यह	125	ईमान नहीं लाते

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾ لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ

उन का रब	पास-हां	सलामती का घर	उन के लिए	126	जो नसीहत पकड़ते हैं	उन लोगों के लिए	आयात

وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢٧﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ

वह जमा करेगा	और जिस दिन	127	वह करते थे	उसका सिला जो	दोस्त दार-कारसाज़	और वह

جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْاِنْسِ ۚ وَقَالَ

और कहेंगें	इन्सान-आदमी	से	तुम ने बहुत घेर लिए (अपने ताबे कर लिए)	ऐ जिन्नात के गिरोह	सब

اَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ

और हम पहुँचे	बाज़ से	हमारे बाज़	हम ने फ़ाइदा उठाया	ऐ हमारे रब	इन्सान	से	उन के दोस्त

اَجَلَنَا الَّذِيْٓ اَجَّلْتَ لَنَا ۭ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहोगे	तुम्हारा ठिकाना	आग	फ़रमाएगा	हमारे लिए	तू ने मुक़र्रर की थी	जो	मीआ़द

فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	128	जानने वाला	हिक्मत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	अल्लाह चाहे	जिसे	मगर	उस मे

ع ١٥ ٨ ٢ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٢٩﴾ ع

129	जो वह करते थे (उन के आमाल)	उसके सबब	बाज़ पर	ज़ालिम (जमा)	बाज़	हम मुसल्लत कर देते हैं

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

तुम में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए तुम्हारे पास	और इन्सान	जिन्नात	ऐ गिरोह

يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम्हारा दिन	मुलाक़ात (देखना)	और तुम्हें डराते थे	मेरी आयात	तुम पर	सुनाते थे (बयान करते थे)

هٰذَا ۭ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓي اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	अपनी जानें	पर (ख़िलाफ़)	वह कहेंगे हम गवाही देते हैं	इस

وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130	कुफ़्र करने वाले थे	कि वह	अपनी जाने (अपने)	पर (ख़िलाफ़)	और उन्हों ने गवाही दी

पस अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है, उस का सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिस को चाहता है कि उसे गुमराह करे, उस का सीना तंग भींचा हुआ (निहायत तंग) कर देता है। गोया कि वह ज़ोर से (बमुश्किल) आस्मान पर चढ़ रहा है, इसी तरह अल्लाह उन लोगों पर अ़ज़ाब डालेगा जो ईमान नहीं लाते। (125)

यह रास्ता है तुम्हारे रब का सीधा, हम ने आयात खोल कर बयान कर दी हैं उन लोगों के लिए जो नसीहत पकड़ते हैं, (126)

उन के लिए उन के रब के पास सलामती का घर है और वह उन का कारसाज़ है उस के सिले में जो वह करते थे। (127)

और जिस दिन वह जमा करेगा उन सब को (फ़रमाएगा) ऐ गिरोह जिन्नात! तुम ने बहुत से आदमी अपने ताबे कर लिए, और इन्सानों में से उन के दोस्त कहेंगे ऐ हमारे रब! हमारे बाज़ ने बाज़ (एक दूसरे) से फ़ाइदा उठाया और हम उस मीआ़द (घड़ी) को पहुँच गए जो तू ने मुक़र्रर की थी। फ़रमाएगा आग तुम्हारा ठिकाना है, उस में हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाहे, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, जानने वाला है। (128)

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ पर (एक दूसरे पर) मुसल्लत कर देते हैं उन के आमाल के सबब। (129)

ऐ गिरोहे जिन्नात ओ इन्सान! क्या तुम्हारे पास तुम में से हमारे रसूल नहीं आए? वह तुम पर हमारे अहकाम बयान करते थे और तुम्हें डराते थे यह दिन देखने से। वह कहेंगे हम अपनी जानों के ख़िलाफ़ (अपने ख़िलाफ़) गवाही देते हैं, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल दिया और उन्हों ने अपने ख़िलाफ़ गवाही दी कि वह काफ़िर थे। (130)

यह इस लिए है कि तेरा रब ज़ुल्म की सज़ा में बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब कि उन के लोग बेख़बर हों। (131)

और हर एक के लिए उन के आमाल के दरजे हैं और तुम्हारा रब उस से बेख़बर नहीं जो वह करते हैं। (132)

और तुम्हारा रब बेनियाज़ है, रहमत वाला, अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए (हलाक कर दे) और जिस को चाहे तुम्हारे बाद जांनशीन कर दे, जैसे उस ने तुम्हें उठाया औलाद से एक दूसरी क़ौम की। (133)

बेशक जिस का तुम से वादा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है और तुम आ़जिज़ करने वाले नहीं। (134)

आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम करते रहो, मैं भी काम कर रहा हूँ, पस तुम अ़नक़रीब जान लोगे किस के लिए है आ़क़िबत का घर। बेशक ज़ालिम (दो जहान की) कामयाबी नहीं पाते । (135)

और (अल्लाह ने) जो खेती और मवेशी पैदा किए हैं उस से उन्हों ने ठहराया है अल्लाह के लिए एक हिस्सा, पस उन्हों ने अपने ख़याल में कहा यह अल्लाह के लिए है और यह हमारे शरीकों के लिए है, पस जो उन के शरीकों के लिए है तो वह नहीं पहुँचता अल्लाह को। और जो अल्लाह के लिए है वह उन के शरीकों को पहुँच जाता है, बुरा है जो वह फ़ैसला करते हैं। (136)

और इसी तरह बहुत से मुश्रिकों के लिए उन के शरीकों ने औलाद का क़त्ल अरास्ता कर दिया है ताकि वह उन्हें हलाक कर दें, और उन पर उन का दीन गुड मड कर दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वह (ऐसा) न करते, सो तुम उन्हें छोड़ो और वह जो झूट बान्धते हैं (वह जानें और उन का झूट)। (137)

ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا

जब कि उन के लोग	ज़ुल्म से	बस्तियां	हलाक कर डालने वाला	तेरा रब	नहीं है	इस लिए कि	यह

غٰفِلُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا رَبُّكَ

तुम्हारा रब	और नहीं	उन्हों ने किया (उन के आमाल)	उस से जो	दरजे	और हर एक के लिए	131	बेख़बर हों

بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٣٢﴾ وَرَبُّكَ الْغَنِىُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ

रहमत वाला	बेनियाज़	और तुम्हारा रब	132	वह करते हैं	उस से जो	बेख़बर

اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ

जैसे	जिस को चाहे	तुम्हारे बाद	और जांनशीन बनादे	तुम्हें ले जाए	वह चाहे	अगर

اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ﴿١٣٣﴾ ؕ اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ

तुम से वादा किया जाता है	जिस	बेशक	133	दूसरी	क़ौम	औलाद	से	उस ने तुम्हें उठाया

لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿١٣٤﴾ قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى

पर	काम करते रहो	ऐ क़ौम	फ़रमा दें	134	आ़जिज़ करने वाले	तुम	और नहीं	ज़रूर आने वाली है

مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ

उस का	होता है	किस	तुम जान लोगे	पस जल्द	काम कर रहा हूँ	मैं	अपनी जगह

عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿١٣٥﴾ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ

और उन्हों ने ठहराया अल्लाह के लिए	135	ज़ालिम	फ़लाह नहीं पाते	बेशक	घर	आख़िरत

مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا

पस उन्हों ने कहा	एक हिस्सा	और मवेशी	खेती से	उस ने पैदा किए	उस से जो

هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ

है	पस जो	हमारे शरीकों के लिए	और यह	उन के झूटे ख़याल के मूताबिक़	यह अल्लाह के लिए

لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ

तो वह	अल्लाह के लिए	है	और जो	अल्लाह	तरफ़ को	पहुँचता	तो नहीं	उन के शरीकों के लिए

يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	136	जो वह फ़ैसला करते हैं	बुरा है	उन के शरीक	तरफ़ (को)	पहुँचता है

زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ

उन की औलाद	क़त्ल	मुश्रिक (जमा)	से	अकसर के लिए	अरास्ता कर दिया है

شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ؕ

उन का दीन	उन पर	और गुड मड कर दें	ताकि वह उन्हें हलाक करदें	उन के शरीक

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾

137	वह झूट बान्धते हैं	और जो	सो तुम उन्हें छोड़ दो	वह न करते	अल्लाह	और अगर चाहता

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ

जिस को	मगर	उसे न खाए	ममनूअ़ (मना किए हुए)	और खेती	मवेशी	यह	और उन्हों ने कहा

نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ

और कुछ मवेशी	उन की पीठ (जमा)	हराम की गई	और कुछ मवेशी	उन के ग़लत ख़याल के मुताबिक़	हम चाहें

لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ

हम जल्द उन्हें सज़ा देंगे	उस पर	झूट बान्धते हैं	उस पर	नाम अल्लाह का	वह नहीं लेते

بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾ وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ

मवेशी (जमा)	इन	पेट में	जो	और उन्हों ने कहा	138	झूट बान्धते थे	उस की जो

خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ

हो	और अगर	हमारी औरतें	पर	और हराम	हमारे मर्दों के लिए	ख़ालिस

مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۭ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ

हिक्मत वाला	बेशक वह	उन का बातें बनाना	वह जल्द उन को सज़ा देगा	शरीक	उस में	तो वह सब	मुर्दा

عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا

बेवकूफ़ी से	अपनी औलाद	उन्हों ने क़त्ल किया	वह लोग जिन्हों ने	अल्बत्ता घाटे में पड़े	139	जानने वाला

بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً عَلَى اللّٰهِ ۭ

अल्लाह पर	झूट बान्धते हुए	अल्लाह ने उन्हें दिया	जो	और हराम ठहराया	बेख़बरी (नादानी से)

الربع ع ١٦ ١١ ٣ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾ وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ

पैदा किए	जिस ने	और वह	140	हिदायत पाने वाले	और वह न थे	यक़ीनन वह गुमराह हुए

جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ

और खेती	और खजूर	और न चढ़ाए हुए	चढ़ाए हुए	बाग़ात

مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۭ

और ग़ैर मुशाबह (जुदा जुदा)	मुशाबह (मिलते जुलते)	और अनार	और ज़ैतून	उस के फल	मुख़्तलिफ़

كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ حَصَادِهٖ ڮ

उस के काटने के दिन	उस का हक़	और अदा करो	वह फल लाए	जब	उस के फल	से	खाओ

وَلَا تُسْرِفُوْا ۭ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٤١﴾ وَمِنَ

और से	141	बेजा ख़र्च करने वाले	पसन्द नहीं करता	बेशक वह	और बेजा ख़र्च न करो

الْاَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۭ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ

अल्लाह ने तुम्हें दिया	उस से जो	खाओ	और ज़मीन से लगे हुए	बार बरदार (बड़े बड़े)	चौपाए

وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿١٤٢﴾

142	खुला	दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	शैतान	क़दम (जमा)	और न पैरवी करो

और उन्हों ने कहा यह मवेशी और खेती ममनूअ़ है, उसे कोई न खाए मगर जिस को हम चाहें उन के (झूटे) ख़याल के मुताबिक़ और कुछ मवेशी हैं कि उन की पीठ पर (सवारी) हराम की है और कुछ मवेशी हैं (ज़ुब्ह करते वक़्त) उन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते, (यह) झूट बान्धना है उस (अल्लाह) पर, हम जल्द उन्हें उस की सज़ा देंगें जो वह झूट बान्धते थे। (138)

और उन्हों ने कहा जो उन मवेशियों के पेट में है वह ख़ालिस हमारे मर्दों के लिए है और हमारी औरतों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सब उस में शरीक हैं, वह जल्द उन्हें उन के बातें बनाने की सज़ा देगा, वह बेशक हिक्मत वाला जानने वाला है। (139)

अलबत्ता वह लोग घाटे में पड़े जिन्हों ने बेवकूफ़ी, नादानी से अपनी औलाद को क़त्ल किया और जो अल्लाह ने उन्हें दिया वह हराम ठहरा लिया झूट बान्धते हुए अल्लाह पर, यक़ीनन वह गुमराह हुए, और वह हिदायत पाने वाले न थे। (140)

और वही (ख़ालिक़) है जिस ने बाग़ात पैदा किए (छतरियों पर) चढ़ाए हुए (जैसे अंगूर) और (छतरियों पर) न चढ़ाए हुए, और खजूर और खेती, उस के फल मुख़्तलिफ़ (क़िस्म के) और ज़ैतून और अनार मिलते जुलते और जुदा जुदा, जब वह फल लाए तो उस के फल खाओ, और उस के काटने के दिन उस का हक़ (उश्र) अदा कर दो, और बेजा ख़र्च न करो, बेशक अल्लाह बेजा ख़र्च करने वालों को पसन्द नहीं करता। (141)

और चौपायों में से (पैदा किए) बार बरदार (बड़े बड़े) और ज़मीन पर लगे हुए (छोटे छोटे), जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से खाओ और शैतान के क़दमों की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (142)

ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ مِنَ الضَّاْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ؕ

दो (2)	बकरी	और से	दो (2)	भेड़	से	जोड़े	आठ (8)

قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ

उस पर	लिपट रहा हो	या जो	या दोनों मादा	हराम किए	क्या दोनों नर	पूछें

اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ نَبِّـُٔوْنِىْ بِعِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٤٣﴾

143	सच्चे	तुम	अगर	किसी इल्म से	मुझे बताओ	दोनों मादा	रहम (जमा)

وَمِنَ الْاِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ؕ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ

क्या दोनों नर	आप पूछें	दो (2)	गाय	और से	दो (2)	ऊँट	और से

حَرَّمَ اَمِ الْاُنْثَيَيْنِ اَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ اَرْحَامُ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ

दोनों मादा	रहम (जमा)	उस पर	लिपट रहा हो	या जो	दोनों मादा	या	उस ने हराम किए

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ وَصّٰىكُمُ اللّٰهُ بِهٰذَا ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ

उस से जो	बड़ा ज़ालिम	पस कौन	इस का	अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया	जब	मौजूद	तुम थे	क्या

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	इल्म	बग़ैर	लोग	ताकि गुमराह करे	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे

لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٤٤﴾ قُلْ لَّآ اَجِدُ فِىْ مَآ اُوْحِىَ اِلَىَّ ع ١٧ ٤

मुझे	जो वहि की गई	में	मैं नहीं पाता	फ़रमा दीजिए	144	जुल्म करने वाले	लोग	हिदायत नहीं देता

مُحَرَّمًا عَلٰى طَاعِمٍ يَّطْعَمُهٗٓ اِلَّآ اَنْ يَّكُوْنَ مَيْتَةً اَوْ دَمًا

या खून	मुर्दार	यह कि हो	मगर	इस को खाए	कोई खाने वाला	पर	हराम

مَّسْفُوْحًا اَوْ لَحْمَ خِنْزِيْرٍ فَاِنَّهٗ رِجْسٌ اَوْ فِسْقًا

या गुनाह की चीज़	नापाक	पस वह	सुव्वर	या गोश्त	बहता हुआ	

اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَاِنَّ

तो बेशक	और न सरकश	न नाफ़रमानी करने वाला	लाचार हो जाए	पस जो	उस पर	ग़ैर अल्लाह का नाम	पुकारा गया

رَبَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤٥﴾ وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا

हम ने हराम कर दिया	यहूदी हुए	वह जो कि	और पर	145	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	तेरा रब

كُلَّ ذِىْ ظُفُرٍ ۚ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُوْمَهُمَآ

उन की चरबियां	उन पर	हम ने हराम कर दिया	और बकरी	और गाय से	नाखुन वाला जानवर	हर एक

اِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُوْرُهُمَآ اَوِ الْحَوَايَآ اَوْ مَا اخْتَلَطَ

जो मिली हो	या	या अंतड़ियां	उन की पीठ (जमा)	जो उठाती हो (लगी हो)	सिवाए

بِعَظْمٍ ؕ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿١٤٦﴾

146	सच्चे हैं	और बेशक हम	उनकी सरकशी का	हम ने उन को बदला दिया	यह	हड्डी से

आठ जोड़े (नर और मादा पैदा किए) दो भेड़ से दो बकरी से, आप पूछें क्या (अल्लाह ने) दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या वह जो दोनों मादा के रहम में लिपटा हुआ (अभी पेट में) हो? मुझे किसी इल्म से बताओ अगर तुम सच्चे हो। (143)

और दो ऊँट से और दो गाए से (पैदा किए), आप (स) पूछें क्या अल्लाह ने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या जो दोनों के रहमों में लिपटा हुआ हो (अभी पेट में हो)? क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने तुम्हें उस का हुक्म दिया था? पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर बुहतान बान्धे झूट ताकि लोगों को इल्म के बग़ैर (जहालत से) गुमराह करे, बेशक अल्लाह जुल्म करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता। (144)

आप (स) फ़रमा दीजिए, जो वहि मुझे दी गई है उस में किसी खाने वाले पर कोई खाना हराम नहीं पाता मगर यह कि वह मुर्दार हो या बहता हुआ खून या सुव्वर का गोश्त, पस वह नापाक है, या गुनाह का (नाजाइज़ ज़बीहा) जिस पर ग़ैर अल्लाह का नाम पुकारा गया हो, पस जो लाचार हो जाए, न नाफ़रमानी करने वाला हो और न सरकश हो तो बेशक तेरा रब बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (145)

और उन लोगों पर जो यहूदी हुए, हम ने हराम कर दिया हर नाखुन वाला जानवर, और हम ने गाए और बकरी की चरबी उन पर हराम कर दी, सिवाए उस के जो उन की पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या हड्डीयों के साथ मिली हो, यह हम ने उन को बदला दिया उन की सरकशी का, और बेशक हम सच्चे हैं। (146)

فَـاِنۡ كَـذَّبُـوۡكَ فَـقُـلۡ رَّبُّـكُـمۡ ذُوۡ رَحۡـمَـةٍ وَّاسِـعَـةٍ ۚ وَلَا يُـرَدُّ

और टाला नहीं जाता	वसीअ़	रहमत वाला	तुम्हारा रब	तो आप (स) कह दें	आप को झुटलाएं	पस अगर

بَـاۡسُـهٗ عَـنِ الۡـقَـوۡمِ الۡـمُـجۡـرِمِـيۡـنَ ﴿١٤٧﴾ سَـيَـقُـوۡلُ الَّـذِيۡـنَ اَشۡـرَكُـوۡا

जिन लोगों ने शिर्क किया (मुश्रिक)	जल्द कहेंगे	147	मुज्रिमों की क़ौम	से	उस का अ़ज़ाब

لَـوۡ شَـآءَ اللّٰهُ مَـآ اَشۡـرَكۡـنَـا وَلَاۤ اٰبَـآؤُنَـا وَلَا حَـرَّمۡـنَـا مِـنۡ شَـىۡءٍ ؕ

कोई चीज़	हम हराम ठहराते	और न	हमारे बाप दादा	और न	हम शिर्क न करते	चाहता अल्लाह	अगर

كَـذٰلِـكَ كَـذَّبَ الَّـذِيۡـنَ مِـنۡ قَـبۡـلِـهِـمۡ حَـتّٰـى ذَاقُـوۡا بَـاۡسَـنَـا ؕ

हमारा अ़ज़ाब	उन्हों ने चखा	यहां तक कि	इन से पहले	जो लोग	झुटलाया	इसी तरह

قُـلۡ هَـلۡ عِـنۡـدَكُـمۡ مِّـنۡ عِـلۡـمٍ فَـتُـخۡـرِجُـوۡهُ لَـنَـا ؕ اِنۡ تَـتَّـبِـعُـوۡنَ

तुम पीछे चलते हो	नहीं	तो उस को निकालो (ज़ाहिर करो) हमारे लिए	कोई इल्म (यक़ीनी बात)	तुम्हारे पास	क्या	फ़रमा दीजिए

اِلَّا الظَّنَّ وَاِنۡ اَنۡـتُمۡ اِلَّا تَخۡرُصُوۡنَ ﴿١٤٨﴾ قُـلۡ فَلِلّٰهِ الۡـحُجَّةُ الۡـبَالِغَةُ ۚ

पूरी	हुज्जत	अल्लाह ही के लिए	फ़रमा दें	148	अटकल चलाते हो	सिर्फ़	तुम	और अगर (नहीं)	मगर (सिर्फ़) गुमान

فَـلَـوۡ شَـآءَ لَـهَـدٰكُـمۡ اَجۡـمَـعِـيۡـنَ ﴿١٤٩﴾ قُـلۡ هَـلُـمَّ شُـهَـدَآءَكُـمُ

अपने गवाह	लाओ	फ़रमा दें	149	सब को	तो तुम्हें हिदायत देता	पस अगर वह चाहता

الَّـذِيۡـنَ يَـشۡـهَـدُوۡنَ اَنَّ اللّٰهَ حَـرَّمَ هٰـذَا ۚ فَـاِنۡ شَـهِـدُوۡا

वह गवाही दें	फिर अगर	यह	हराम किया	कि अल्लाह	गवाही दें	जो

فَـلَا تَـشۡـهَـدۡ مَـعَـهُـمۡ ۚ وَلَا تَـتَّـبِـعۡ اَهۡـوَآءَ الَّـذِيۡـنَ كَـذَّبُـوۡا

झुटलाया	जो लोग	ख़्वाहिशात	और न पैरवी करना	उन के साथ	तो तुम गवाही न देना

بِـاٰيٰـتِـنَـا وَالَّـذِيۡـنَ لَا يُـؤۡمِـنُـوۡنَ بِـالۡاٰخِـرَةِ وَهُـمۡ بِـرَبِّـهِـمۡ

अपने रब के	और वह	आख़िरत पर	ईमान लाते हैं	नहीं	और जो लोग	हमारी आयतों को

ع ١٨ ٦ ٥ يَـعۡـدِلُـوۡنَ ﴿١٥٠﴾ قُـلۡ تَـعَـالَـوۡا اَتۡـلُ مَـا حَـرَّمَ رَبُّـكُـمۡ عَـلَـيۡـكُـمۡ

तुम पर	तुम्हारा रब	जो हराम किया	मैं पढ़ कर सुनाऊँ	आओ	फ़रमा दें	150	बराबर ठहराते हैं

اَلَّا تُـشۡـرِكُـوۡا بِـهٖ شَـيۡـئًـا وَّبِـالۡـوَالِـدَيۡـنِ اِحۡـسَـانًـا ۚ وَلَا تَـقۡـتُـلُـوۡۤا

और न क़त्ल करो	नेक सुलूक	और वालिदैन के साथ	कुछ-कोई	उस के साथ	कि न शरीक ठहराओ

اَوۡلَادَكُـمۡ مِّـنۡ اِمۡـلَاقٍ ؕ نَـحۡـنُ نَـرۡزُقُـكُـمۡ وَاِيَّـاهُـمۡ ۚ وَلَا تَـقۡـرَبُـوا

और क़रीब न जाओ	और उन को	तुम्हें रिज़्क़ देते हैं	हम	मुफ़लिसी	से	अपनी औलाद

الۡـفَـوَاحِـشَ مَـا ظَـهَـرَ مِـنۡـهَـا وَمَـا بَـطَـنَ ۚ وَلَا تَقۡتُلُوا الـنَّـفۡـسَ الَّـتِـىۡ

जो-जिस	जान	और न क़त्ल करो	छुपी हो	और जो	जो ज़ाहिर हो उस से (उन में)	बेहयाई (जमा)

حَـرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِـالۡـحَـقِّ ؕ ذٰلِـكُـمۡ وَصّٰـكُـمۡ بِـهٖ لَـعَـلَّـكُـمۡ تَـعۡـقِـلُـوۡنَ ﴿١٥١﴾

151	अ़क़्ल से काम लो (समझो)	ताकि तुम	इस का	तुम्हें हुक्म दिया है	यह	मगर हक़ पर	अल्लाह ने हुर्मत दी

पस अगर वह आप (स) को झुटलाएं तो आप (स) कहदें तुम्हारा रब वसीअ़ रहमत वाला है, और उस का अ़ज़ाब मुज्रिमों की क़ौम से टाला नहीं जाता। (147)

मुश्रिक जल्द कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते न हमारे बाप दादा, और न हम कोई चीज़ हराम ठहराते, इसी तरह (उन लोगों ने) झुटलाया जो उन से पहले थे यहां तक कि उन्हों ने हमारा अ़ज़ाब चखा, आप (स) फ़रमा दीजिए क्या तुम्हारे पास कोई यक़ीनी बात है? तो उस को हमारे सामने ज़ाहिर करो, तुम सिर्फ़ गुमान के पीछे चलते हो और तुम सिर्फ़ अटकल चलाते हो। (148)

आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही की हुज्जत पूरी (ग़ालिब) है, अगर वह चाहता तो तुम सब को हिदायत दे देता। (149)

आप (स) फ़रमा दें: लाओ अपने गवाह जो गवाही दें कि अल्लाह ने यह हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दे दें तो भी तुम उन के साथ गवाही न देना, और उन की ख़्वाहिशात की पैरवी न करना जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह लोग आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और वह (माबूदाने बातिल को) अपने रब के बराबर ठहराते हैं। (150)

आप (स) फ़रमा दें आओ मैं पढ़ कर सुनाऊँ जो हराम किया है तुम पर तुम्हारे रब ने कि उस के साथ शरीक न ठहराओ और वालिदैन के साथ नेक सुलूक करो, और क़त्ल न करो अपनी औलाद को मुफ़लिसी (के डर) से, हम तुम्हें रिज़्क़ देते हैं और उन को (भी), और बेहयाइयों के क़रीब न जाओ जो उन में खुली हो और जो छुपी हो, और जिस जान को अल्लाह ने हुर्मत दी है उसे क़त्ल न करो मगर हक़ पर, यह तुम्हें इस का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो। (151)

और यतीम के माल के क़रीब न जाओ मगर इस तरह कि वह बेहतरीन हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँच जाए, और इन्साफ़ के साथ माप तोल पूरा करो, हम किसी को तक्लीफ़ नहीं देते (बोझ नहीं डालते) मगर उस के मक़्दूर के मुताबिक़, और जब बात करो तो इन्साफ़ की करो, ख़ाह रिश्तेदार (का मामला) हो। और अल्लाह का अ़हद पूरा करो, उस ने तुम्हें यह हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (152)

और यह मेरा रास्ता सीधा है, पस उस पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुम्हें इस रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम्हें इस का हुक्म दिया ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो। (153)

फिर हम ने मूसा (अ) को किताब दी, उस पर अपनी नेमत पूरी करने को जो नेकोकार है, और हर चीज़ की तफ़्सील के लिए, और हिदायत ओ रहमत के लिए, ताकि वह अपने रब से मुलाक़ात पर ईमान ले आएं। (154)

और हम ने यह किताब उतारी है बरकत वाली, पस इस की पैरवी करो और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (155)

कि (कहीं) तुम कहो कि हम से पहले दो गिरोहों पर किताब उतारी गई, और यह कि हम उन के पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। (156)

या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम ज़ियादा हिदायत पर होते उन से, सो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील और हिदायत और रहमत आ गई, पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह की आयतों को झुटलादे और उन से कतराए, हम उन लोगों को जल्द सज़ा देंगे जो कतराते हैं हमारी आयतों से, बुरा अ़ज़ाब उस के बदले कि वह कतराते थे। (157)

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى

यहां तक कि	बेहतरीन	वह	ऐसे जो	मगर	यतीम	माल	और क़रीब न जाओ

يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ

हम तक्लीफ़ नहीं देते	इन्साफ़ के साथ	और तोल	माप	और पूरा करो	अपनी जवानी	पहुँच जाए

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَاِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۚ

रिश्तेदार	ख़ाह हो	तो इन्साफ़ करो	तुम बात करो	और जब	उस की वुस्अ़त (मक़्दूर)	मगर	किसी को

وَبِعَهْدِ اللّٰهِ اَوْفُوْا ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٢﴾

152	नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	इस का	उस ने तुम्हें हुक्म दिया	यह	पूरा करो	और अल्लाह का अ़हद

وَاَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ

रास्ते	और न चलो	पस उस पर चलो	सीधा	मेरा रास्ता	यह	और यह कि

فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٥٣﴾

153	परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि तुम	तुम्हें हुक्म दिया इस का	यह	उस का रास्ता	से	तुम्हें	पस जुदा कर दें

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ اَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا

और तफ़्सील	नेकोकार है	जो	पर	नेमत पूरी करने को	किताब	मूसा (अ)	फिर हम ने दी

لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٥٤﴾ ع ١٩ ٦

154	ईमान लाएं	अपना रब	मुलाक़ात पर	ताकि वह	और रहमत	और हिदायत	हर चीज़ की

وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम पर	और परहेज़गारी इख़्तियार करो	पस उसकी पैरवी करो	बरकत वाली	हम ने नाज़िल की	किताब	और यह

تُرْحَمُوْنَ ﴿١٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰي طَاۗىِٕفَتَيْنِ

दो गिरोह	पर	किताब	उतारी गई थी	इस के सिवा नहीं	तुम कहो	कि	155	रहम किया जाए

مِنْ قَبْلِنَا ۠ وَاِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ ﴿١٥٦﴾ اَوْ تَقُوْلُوْا

या तुम कहो	156	बेख़बर	उन के पढ़ने पढ़ाने	से	और यह कि हम थे	हम से पहले

لَوْ اَنَّآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ اَهْدٰى مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاۗءَكُمْ

पस आ गई तुम्हारे पास	उन से	ज़ियादा हिदायत पर	अलबत्ता हम होते	किताब	हम पर	उतारी जाती	अगर हम

بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ۚ فَمَنْ اَظْلَمُ

बड़ा ज़ालिम	पस कौन	और रहमत	और हिदायत	तुम्हारा रब	से	रौशन दलील

مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ۭ سَنَجْزِي الَّذِيْنَ

उन लोगों को जो	हम जल्द सज़ा देंगे	उस से	और कतराए	अल्लाह की आयतों को	झुटलादे	उस से जो

يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْۗءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ ﴿١٥٧﴾

157	वह कतराते थे	उस के बदले	अ़ज़ाब	बुरा	हमारी आयतें	से	कतराते हैं

هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يَاْتِيَ رَبُّكَ اَوْ يَاْتِيَ

या आए	तुम्हारा रब	या आए	फ़रिश्ते	उन के पास आएं	यह	मगर	क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं

بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ؕ يَوْمَ يَاْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا

किसी को	न काम आएगा	तुम्हारा रब	निशानी	कोई	आई	जिस दिन	तुम्हारा रब	निशानियां	कुछ

اِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ اَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ اِيْمَانِهَا خَيْرًا ؕ قُلِ

फ़रमा दें	कोई भलाई	अपने ईमान में	कमाई	या	उस से पहले	ईमान लाया	न था	उस का ईमान

انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا

गिरोह दर गिरोह	और हो गए	अपना दीन	तफ़रक़ा डाला	वह लोग जिन्हों ने	बेशक	158	मुन्तज़िर हैं	हम	इन्तिज़ार करो तुम

لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا

वह जो	वह जतला देगा उन्हें	फिर	अल्लाह के हवाले	उन का मामला	फ़क़त	किसी चीज़ में (कोई तअ़ल्लुक़)	उन से	नहीं आप (स)

كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ وَمَنْ

और जो	उस के बराबर	दस	तो उस के लिए	लाए कोई नेकी	जो	159	करते थे

جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾ قُلْ اِنَّنِيْ

बेशक मुझे	कह दीजिए	160	न ज़ुल्म किए जाएंगे	और वह	मगर उस के बराबर	तो न बदला पाएगा	कोई बुराई लाए

هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ

इब्राहीम (अ)	मिल्लत	दुरुस्त	दीन	सीधा	रास्ता	तरफ़	मेरा रब	राह दिखाई

حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾ قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ

मेरी क़ुरबानी	मेरी नमाज़	बेशक	आप कह दें	161	मुश्रिक (जमा)	से	और न थे	एक का हो कर रहने वाला

وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ

मुझे हुक्म दिया गया	और उसी का	उस का	नहीं कोई शरीक	162	सारे जहान का	रब	अल्लाह के लिए	और मेरा मरना	और मेरा जीना

وَاَنَا اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ؕ

हर शै	रब	और वह	कोई रब	मैं ढूनडूँ	क्या सिवाए अल्लाह	आप कह दें	163	मुसलमान (फ़रमांबरदार)	सब से पहला	और मैं

وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ ثُمَّ اِلٰى

तरफ़	फिर	बोझ दूसरा	उठाएगा कोई उठाने वाला	और न	उस के ज़िम्मे	मगर (सिर्फ़)	हर शख़्स	और न कमाएगा

رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾ وَهُوَ الَّذِيْ

जिस ने	और वह	164	तुम इख़्तिलाफ़ करते	उस में	तुम थे	वह जो	पस वह तुम्हें जतला देगा	तुम्हारा लौटना	तुम्हारा (अपना) रब

جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ

ताकि तुम्हें आज़माए	दरजे	बाज़	पर-ऊपर	तुम में से बाज़	और बुलन्द किए	ज़मीन	नाइब	तुम्हें बनाया

ع ٢٠ ٢١ النصف
فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖؗ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

165	निहायत मेहरबान	यक़ीनन बख़्शने वाला	और बेशक वह	सज़ा देने वाला	तेज़	तुम्हारा रब	बेशक	जो उस ने तुम्हें दिया	में

क्या वह इन्तिज़ार कर रहे हैं मगर यह कि उन के पास फ़रिश्ते आएं या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की बाज़ निशानी आए, जिस दिन आएगी तुम्हारे रब की बाज़ निशानी, किसी के काम न आएगा उस का ईमान लाना जो पहले से ईमान न लाया था या अपने ईमान में कोई भलाई न कमाई थी, आप (स) फ़रमा दें इन्तिज़ार करो हम (भी) मुन्तज़िर हैं। (158)
बेशक जिन लोगों ने तफ़रक़ा डाला अपने दीन में और गिरोह दर गिरोह हो गए, आप (स) का उन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं, उन का मामला फ़क़त अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें जतला देगा वह जो कुछ करते थे। (159)
जो शख़्स कोई नेकी लाए तो उस के लिए उस का दस बराबर (दस गुना अजर) है, और जो कोई बुराई लाए तो वह बदला न पाएगा मगर उस के बराबर (सिर्फ़ उस के बराबर), और वह ज़ुल्म न किए जाएंगे। (160)
आप (स) कह दीजिए बेशक मुझे मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ राह दिखाई है, दुरुस्त दीन, इब्राहीम (अ) की मिल्लत, जो एक (अल्लाह) के हो रहने वाले थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (161)
आप (स) कह दें बेशक मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी और मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे जहानों का रब है। (162)
उस का कोई शरीक नहीं, मुझे उसी का हुक्म दिया गया है, और मैं सब से पहला मुसलमान (फ़रमांबरदार) हूँ। (163)
आप (स) कह दें क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और रब ढूनडूँ? और वही है हर शै का रब, हर शख़्स जो कुछ कमाएगा (उस का गुनाह) सिर्फ़ उस के ज़िम्मे (होगा), कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, पस वह तुम्हें जतला देगा जिस में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (164)
और वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में नाइब बनाया, और बुलन्द किए तुम में से बाज़ के दरजे बाज़ पर, ताकि वह तुम्हें उस में आज़माए जो उस ने तुम्हें दिया, बेशक तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है, और वह बेशक यक़ीनन बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (165)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम-सॉद (1)

यह किताब तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तो इस से तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो ताकि तुम उस (के ज़रीए) से डराओ, और ईमान वालों के लिए नसीहत है। (2)

उस की पैरवी करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है, और पीछे न लगो उस के सिवा (और) रफ़ीक़ों के, बहुत कम तुम नसीहत कुबूल करते हो। (3)

और हम ने कितनी ही बस्तियां हलाक कीं, पस उन पर हमारा अ़ज़ाब रात को सोते में आया या दोपहर को आराम करते। (4)

पस उन की पुकार (इस के सिवा) न थी जब उन पर आया हमारा अ़ज़ाब, तो उन्हों ने कहा कि बेशक ज़ालिम हम ही थे। (5)

सो हम उन से ज़रूर पूछेंगे जिन की तरफ़ रसूल भेजे गए और हम रसूलों से (भी) ज़रूर पूछेंगे। (6)

अलबत्ता हम उन को अपने इल्म से अहवाल सुना देंगे और हम ग़ाइब न थे। (7)

और उस दिन (आमाल का) वज़न होना बरहक़ है, तो जिन की नेकियों के वज़न भारी हुए, वही फ़लाह (नजात) पाने वाले हैं। (8)

और जिन के (नेकियों के) वज़न हलके हुए तो वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों का नुक़्सान किया, क्यों कि वह हमारी आयतों से ना इन्साफ़ी करते थे। (9)

और बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया और हम ने उस में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सामान बनाए, बहुत कम हैं जो शुक्र करते हैं। (10)

और अलबत्ता हम ने तुम्हें पैदा किया और फिर हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई, फिर हम ने फ़रिश्तों को कहा आदम (अ) को सिज्दा करो तो उन्हों ने सिज्दा किया सिवाए इब्लीस के, वह सिज्दा करने वालों में से न था। (11)

آيَاتُهَا ٢٠٦ ❀ (٧) سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

रुकूआत 24	(7) सूरतुल आराफ़ बुलन्दियां	आयात 206

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ

कोई तंगी	तुम्हारे सीने में	सो न हो	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल की गई	किताब	1	अलिफ़-लाम-मीम-साद

مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾ اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ

जो नाज़िल किया गया	पैरवी करो	2	ईमान वालों के लिए	और नसीहत	इस से	ताकि तुम डराओ	इस से

اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ قَلِيْلًا مَّا

जो	बहुत कम	रफ़ीक़ (जमा)	उस के सिवा	से	और पीछे न लगो	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़ (तुम पर)

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾ وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا بَيَاتًا

रात में सोते	हमारा अ़ज़ाब	पस उन पर आया	हम ने हलाक कीं	बस्तियां	से	और कितनी ही	3	नसीहत कुबूल करते हो

اَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ ﴿٤﴾ فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ اِلَّآ اَنْ

मगर यह कि (तो)	हमारा अ़ज़ाब	उन पर आया	जब	उन का कहना (उन की पुकार)	पस न था	4	क़ैलूला करते (दोपहर को आराम करते)	या वह

قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥﴾ فَلَنَسْــَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ

उन की तरफ़	भेजे गए (रसूल)	उन से जो	सो हम ज़रूर पूछेंगे	5	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे	उन्हों ने कहा

وَلَنَسْــَٔلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٦﴾ فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا

और हम न थे	इल्म से	उन को	अलबत्ता हम अहवाल सुना देंगे	6	रसूल (जमा)	और हम ज़रूर पूछेंगे

غَآئِبِيْنَ ﴿٧﴾ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ ِۨالْحَقُّ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ

मीज़ान (नेकियों के वज़न)	भारी हुए	तो जिस	बरहक़	उस दिन	और वज़न	7	ग़ाइब

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨﴾ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ

तो वही लोग	वज़न	हलके हुए	और जिस	8	फ़लाह पाने वाले	वह	तो वही

الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ وَلَقَدْ

और बेशक	9	ना इन्साफ़ी करते	हमारी आयतों से	क्यों कि थे	अपनी जानें	नुक़्सान किया	वह जिन्हों ने

مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ قَلِيْلًا

बहुत कम	ज़िन्दगी के सामान	उस में	तुम्हारे लिए	और हम ने बनाए	ज़मीन में	हम ने तुम्हें ठिकाना दिया

مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿١٠﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ ع ١ ٨

फ़रिश्तों को	फिर हम ने कहा	हम ने तुम्हारी शक्ल ओ सूरत बनाई	फिर	हम ने तुम्हें पैदा किया	और अलबत्ता	10	जो तुम शुक्र करते हो

اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ﴿١١﴾

11	सिज्दा करने वाले	से	वह न था	इब्लीस	सिवाए	तो उन्हों ने सिज्दा किया	आदम को	सिज्दा करो

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ؕ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ

उस ने फ़रमाया	किस ने तुझे मना किया	कि तू सिज्दा न करे	जब मैं ने तुझे हुक्म दिया	वह बोला	मैं	बेहतर	उस से	तू ने मुझे पैदा किया

مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿۱۲﴾ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ

से	आग	और तू ने उसे पैदा किया	से	मिट्टी	12	फ़रमाया	पस तू उतर जा	इस (यहां) से	तो नहीं	है	तेरे लिए

اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿۱۳﴾ قَالَ اَنْظِرْنِيْۤ

कि	तू तकब्बुर करे	इस में (यहां)	पस निकल जा	बेशक तू	से	ज़लील (जमा)	13	वह बोला	मुझे मोहलत दे

اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿۱۴﴾ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿۱۵﴾ قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَيْتَنِيْ

उस दिन तक	उठाए जाएंगे	14	फ़रमाया	बेशक तू	से	मोहलत मिलने वाले	15	वह बोला	तो जैसे	तू ने मुझे गुमराह किया

لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۱۶﴾ۙ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

मैं ज़रूर बैठूंगा	उन के लिए	तेरा रास्ता	सीधा	16	फिर	मैं ज़रूर उन तक आऊंगा	से	उन के सामने

وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ

और पीछे से उन के	और से	उन के दाएं	और से	उन के बाएं	और तू न पाएगा	उन के अक्सर

شٰكِرِيْنَ ﴿۱۷﴾ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ

शुक्र करने वाले	17	फ़रमाया	निकल जा	यहां से	ज़लील	मर्दूद हो कर	अलबत्ता जो	तेरे पीछे लगा	उन से

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿۱۸﴾ وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ

ज़रूर भर दूंगा	जहन्नम	तुम से	सब	18	और ऐ आदम (अ)	रहो	तू	और तेरी बीवी	जन्नत

فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ

तुम दोनों खाओ	जहां से	तुम चाहो	और क़रीब न जाना	उस	दरख़्त	पस हो जाओगे	से

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۹﴾ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَاوٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ

ज़ालिम (जमा)	19	पस वस्वसा डाला	उन के लिए	शैतान	ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिए	जो पोशीदा थीं	उन से	से

سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَا

उन की सत्र की चीज़ें	और वह बोला	नहीं	तुम्हें मना किया	तुम्हारा रब	से	उस	दरख़्त	मगर	इस लिए कि	तुम हो जाओ

مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ

फ़रिश्ते	या हो जाओ	से	हमेशा रहने वाले	20	और उन से क़सम खागया	मैं बेशक	तुम्हारे लिए	अलबत्ता- से

النّٰصِحِيْنَ ﴿۲۱﴾ۙ فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا

ख़ैर ख़ाह (जमा)	21	पस उन को माइल कर लिया	धोके से	पस जब	उन दोनों ने चखा	दरख़्त	खुल गईं	उन के लिए	उन की सत्र की चीज़ें

وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا

और लगे	जोड़ जोड़ कर रखने	अपने ऊपर	से	पत्ते	जन्नत	और उन्हें पुकारा	उन का रब	क्या तुम्हें मना न किया था

عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿۲۲﴾

उस से मुतअ़ल्लिक़	दरख़्त	और कहा	तुम से	बेशक	शैतान	तुम्हारा	दुश्मन	खुला	22

उस ने फ़रमाया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया तो तुझे किस ने मना किया कि तू सिज्दा न करे? वह बोला मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया। (12)
फ़रमाया पस तू यहां से उतर जा, तेरे लिए (लाइक़) नहीं कि तू गुरूर ओ तकब्बुर करे यहां, पस निकल जा, बेशक तू ज़लीलों में से है। (13)
वह बोला मुझे उस दिन तक मोहलत दे (जिस दिन मुर्दे) उठाए जाएंगे। (14)
फ़रमाया बेशक तू मोहलत मिलने वालों में से है (तुझे मोहलत दी गई) (15)
वह बोला जैसे तू ने मेरे गुमराह (होने का फ़ैसला) किया है। मैं ज़रूर बैठूँगा उन के लिए (गुमराह करने के लिए) तेरे सीधे रास्ते पर। (16)
फिर मैं उन तक ज़रूर आऊँगा उन के सामने से और उन के पीछे से, और उन के दाएं से और उन के बाएं से, और तू उन में से अक्सर को शुक्र करने वाले न पाएगा। (17)
फ़रमाया यहां से निकल जा ज़लील मर्दूद हो कर। उन में से जो तेरे पीछे लगा, अलबत्ता मैं ज़रूर जहन्नम को भर दूंगा तुम सब से। (18)
ऐ आदम (अ)! तुम और तुम्हारी बीवी (हव्वा) जन्नत में रहो, पस खाओ जहां से तुम चाहो और उस दरख़्त के क़रीब न जाना, (अगर ऐसा करोगे) तो ज़ालिमों में से हो जाओगे। (19)
पस वस्वसा डाला शैतान ने उन के लिए (उन के दिल में) ताकि उन के सत्र की चीज़े जो उन से पोशीदा थीं उन के लिए ज़ाहिर कर दे, और बोला तुम्हारे रब ने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया मगर इस लिए कि (कहीं) तुम फ़रिश्ते हो जाओ या हो जाओ हमेशा रहने वालों में से। (20)
और उन से क़सम खागया कि मैं बेशक तुम्हारे लिए ख़ैर ख़ाहों से हूँ। (21)
पस उस ने उन को माइल कर लिया धोके से, पस जब उन्हों ने दरख़्त चखा तो उन के लिए उन की सत्र की चीज़ें खुल गईं और वह अपने ऊपर जोड़ जोड़ कर रखने लगे (सत्र छुपाने के लिए) जन्नत के पत्ते, और उन के रब ने उन्हें पुकारा क्या मैं ने तुम्हें उस दरख़्त से मना नहीं किया था? और कहा था तुम्हें कि बेशक शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। (22)

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ

से	हम ज़रूर हो जाएंगे	और हम पर रहम (न) किया	न बख़्शा तू ने हमें	और अगर	अपने ऊपर	हम ने ज़ुल्म किया	ऐ हमारे रब	उन दोनों ने कहा

الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और तुम्हारे लिए	दुश्मन	बाज़	तुम में से बाज़	उतरो	फ़रमाया	23	ख़सारा पाने वाले

مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا

और उस में	तुम जियोगे	उस में	फ़रमाया	24	एक वक़्त तक	और सामान	ठिकाना

ع ٢ ١٥ ٩

تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا

लिबास	तुम पर	हम ने उतारा	ऐ औलादे आदम (अ)	25	तुम निकाले जाओगे	और उस से	तुम मरोगे

يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ مِنْ

से	यह	बेहतर	यह	परहेज़गारी	और लिबास	और ज़ीनत	तुम्हारे सत्र	ढांके

اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰبَنِىْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ

शैतान	न बहका दे तुम्हें	ऐ औलादे आदम (अ)	26	वह ग़ौर करें	ताकि वह	अल्लाह की निशानियां

كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ

उन के सत्र	ताकि ज़ाहिर कर दे	उन के लिबास	उन से	उतरवा दिए	जन्नत	से	तुम्हारे माँ बाप	उस ने निकाला	जैसे

اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	बेशक हम ने बनाया	तुम उन्हें नहीं देखते	जहां	से	और उस का क़बीला	वह	तुम्हें देखता है वह	बेशक

اَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا

हम ने पाया	कहें	कोई बेहयाई	वह करें	और जब	27	ईमान नहीं लाते	उन लोगों के लिए	दोस्त-रफ़ीक़

عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۭ

बेहयाई का	हुक्म नहीं देता	बेशक अल्लाह	फ़रमा दें	उस का	हमें हुक्म दिया	और अल्लाह	अपने बाप दादा	इस पर

اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾ قُلْ اَمَرَ رَبِّىْ بِالْقِسْطِ ۡ

इन्साफ़ का	मेरा रब	हुक्म दिया	फ़रमा दें	28	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	क्या तुम कहते हो (लगाते हो)

وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ

ख़ालिस हो कर	और पुकारो	हर मस्जिद (नमाज़)	नज़दीक (वक़्त)	अपने चहरे	और क़ाइम करो (सीधे करो)

لَهُ الدِّيْنَ ۭ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَرِيْقًا هَدٰى

उस ने हिदायत दी	एक फ़रीक़	29	दोबारा (पैदा) होगे	तुम्हारी इब्तिदा की (पैदा किया)	जैसे	दीन (हुक्म)	उस के लिए

وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ

शैतान (जमा)	उन्हों ने बना लिया	बेशक वह	गुमराही	उन पर	साबित हो गई	और एक फ़रीक़

اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

30	हिदायत पर हैं	कि वह बेशक	और समझते हैं	अल्लाह के सिवा	से	रफ़ीक़

उन दोनों ने कहा ऐ हमारे रब! हम ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, और अगर तू ने हमें न बख़्शा और हम पर रहम न किया तो हम ज़रूर ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे। (23)

फ़रमाया तुम उतरो, तुम में से बाज़ बाज़ के दुश्मन हैं, और तुम्हारे लिए ज़मीन में एक वक़्त (मुऐयन) तक ठिकाना और सामाने ज़ीस्त है। (24)

फ़रमाया उस में तुम जियोगे और उस में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (25)

ऐ औलादे आदम (अ)! हम ने तुम पर उतारा लिबास जो ढांके तुम्हारे सत्र और (मौजिबे) ज़ीनत हो, और परहेज़गारी का लिबास सब से बेहतर है, यह (लिबास) अल्लाह की निशानियों में से है ताकि वह ग़ौर करें। (26)

ऐ औलादे आदम (अ)! कहीं शैतान तुम्हें बहका न दे, जैसे उस ने निकाला तुम्हारे माँ बाप (आदम ओ हव्वा) को जन्नत से, उन के लिबास उतरवा दिए ताकि उन के सत्र ज़ाहिर कर दे, बेशक तुम्हें देखता है वह और उस का क़बीला उस जगह से जहां तुम उन्हें नहीं देखते, बेशक हम ने शैतानों को उन लोगों का रफ़ीक़ बना दिया जो ईमान नहीं लाते। (27)

और जब वह बेहयाई करें तो कहें हम ने अपने बाप दादा को उस पर पाया है और अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है उस का, आप (स) फ़रमा दें, बेशक अल्लाह बेहयाई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर (वह बात) लगाते हो जो तुम नहीं जानते। (28)

आप (स) फ़रमा दें मेरे रब ने मुझे इन्साफ़ का हुक्म दिया है, और अपने चहरे हर नमाज़ के वक़्त सीधे करो, और उसे पुकारो ख़ालिस उस के हुक्म के फ़रमांबरदार हो कर, जैसे तुम्हें (पहले) पैदा किया तुम दोबारा भी (पैदा किए जाओगे)। (29)

एक फ़रीक़ को हिदायत दी और एक फ़रीक़ पर गुमराही साबित हो गई, बेशक उन्हों ने अल्लाह के सिवा शैतानों को अपना रफ़ीक़ बना लिया है और समझते हैं कि वह बेशक हिदायत पर हैं। (30)

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا

और पियो	और खाओ	हर मस्जिद (नमाज़)	क़रीब (वक़्त)	अपनी ज़ीनत	लेलो (इख़्तियार करलो)	ऐ औलादे आदम

ع ٣ ٦ ١٠
وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ

अल्लाह की ज़ीनत	हराम किया	किस	फ़रमा दें	31	फ़ुज़ूल ख़र्च करने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और बेजा ख़र्च न करो

الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	यह	फ़रमा दें	रिज़्क़	से	और पाक	अपने बन्दों के लिए	उस ने निकाली	जो कि

فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ

गिरोह के लिए	आयतें	हम खोल कर बयान करते हैं	इसी तरह	क़ियामत के दिन	ख़ालिस तौर पर	दुनिया	ज़िन्दगी में

يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣٢﴾ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ

पोशीदा	और जो	उन से	ज़ाहिर हैं	जो	बेहयाई	मेरा रब	हराम किया	सिर्फ़ (तो)	फ़रमा दें	32	वह जानते हैं

وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا

कोई सनद	उस की	नहीं नाज़िल की	जो-जिस	अल्लाह के साथ	तुम शरीक करो	और यह कि	नाहक़ को	और सरकशी	और गुनाह

وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَاۗءَ

आएगा	पस जब	एक मुद्दत मुक़र्रर	और हर उम्मत के लिए	33	तुम नहीं जानते	जो	अल्लाह पर	तुम कहो (लगाओ)	और यह कि

اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٤﴾ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا

अगर	ऐ औलादे आदम	34	आगे बढ़ सकेंगे	और न	एक घड़ी	न वह पीछे हो सकेंगे	उन का मुक़र्ररा वक़्त

يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى وَاَصْلَحَ

और इस्लाह कर ली	डरा	तो जो	मेरी आयात	तुम पर (तुम्हें)	बयान करें (सुनाएं)	तुम में से	रसूल	तुम्हारे पास आएं

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا

हमारी आयात को	झुटलाया	और वह लोग जो	35	ग़मगीन होंगे	वह	और न	उन पर	कोई ख़ौफ़ नहीं

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٣٦﴾ فَمَنْ

पस कौन	36	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़ख़ वाले	यही लोग	उन से	और तकब्बुर किया

اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اُولٰۗىِٕكَ

यही लोग	उस की आयतों को	या झुटलाया	झूट	अल्लाह पर	बुहतान बान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम

يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُنَا

हमारे भेजे हुए	उन के पास आएंगे	जब	यहां तक कि	किताब (लिखा हुआ)	से	उन का नसीब (हिस्सा)	उन्हें पहुँचेगा

يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह के सिवा	से	पुकारते	तुम थे	कहां जो	वह कहेंगे	उन की जान निकालने

قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ﴿٣٧﴾

37	काफ़िर थे	कि वह	अपनी जानें	पर	और गवाही देंगे	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे

ऐ औलादे आदम (अ)! अपनी ज़ीनत हर नमाज़ के वक़्त इख़्तियार करो और खाओ और पियो और बेजा ख़र्च न करो, बेशक अल्लाह फ़ुज़ूल ख़र्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (31) आप (स) फ़रमा दें किस ने हराम की है अल्लाह की (वह) ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिए निकाली (पैदा) की है, और पाक रिज़्क़, आप (स) फ़रमा दें यह दुनिया की ज़िन्दगी में उन लोगों के लिए है जो ईमान लाए और ख़ालिस तौर पर क़ियामत के दिन (उन्हीं का हिस्सा है), इसी तरह हम आयतें खोल कर बयान करते हैं उस गिरोह के लिए जो जानते हैं। (32) आप फ़रमा दें मेरे रब ने तो हराम क़रार दिया है बेहयाइयों को, उन में जो ज़ाहिर हैं और जो पोशीदा हैं, और गुनाह और सरकशी नाहक़ को, और यह कि तुम अल्लाह के साथ शरीक करो जिस की उस ने कोई सनद नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह पर लगाओ (वह बात) जो तुम नहीं जानते। (33) और हर उम्मत के लिए एक मुद्दत मुक़र्रर है, पस जब उन का मुक़र्ररा वक़्त आजाएगा तो न वह पीछे हो सकेंगे एक घड़ी और न आगे बढ़ सकेंगे। (34) ऐ औलादे आदम (अ)! अगर तुम्हारे पास तुम ही से मेरे रसूल आएं, सुनाएं तुम्हें मेरी आयात तो जो डरा और उस ने इस्लाह कर ली, उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (35) और जिन लोगों ने हमारी आयात को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (36) पस उस से बड़ा ज़ालिम कौन जिस ने अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धा या उस की आयतों को झुटलाया, यही वह लोग हैं जिन्हें उन का हिस्सा किताब (लौहे महफ़ूज़) में लिखा हुआ पहुँचेगा, यहां तक जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उन के पास उन की जान निकालने आएंगे वह कहेंगे कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे? वह (जवाब में) कहेंगे वह हम से गुम हो गए, और वह अपनी जानों पर (अपने ख़िलाफ़) गवाही देंगे कि वह काफ़िर थे। (37)

(अल्लाह) फ़रमाएगा तुम दाख़िल हो जाओ जहन्नम में उन उम्मतों के हमराह जो गुज़र चुकीं तुम से क़ब्ल, जिन्नों और इन्सानों में से, जब कोई उम्मत दाख़िल होगी वह अपनी साथी (पहली उम्मत) पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उस मे दाख़िल हो जाएंगें तो उन के पिछले अपने पहलों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब! यह हैं जिन्हों ने हम को गुमराह किया, पस उन्हें आग का दो गुना अ़ज़ाब दे। (अल्लाह तआ़ला) फ़रमाएगा हर एक के लिए दो गुना है, लेकिन तुम जानते नहीं। **(38)**

और उन के पहले अपने पिछलों को कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई बड़ाई नहीं, लिहाज़ा चखो अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। **(39)**

बेशक जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिए आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे और जन्नत में दाख़िल न होंगे जब तक ऊँट दाख़िल (न) हो जाए सुई के नाके में (जो मुमकिन नहीं), इसी तरह हम मुज्रिमों को बदला देते हैं। **(40)**

उन के लिए जहन्नम का बिछौना है ओर उन के ऊपर से (जहन्नम ही का) ओढ़ना है, इसी तरह हम ज़ालिमों को बदला देते हैं। **(41)**

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, हम किसी पर बोझ नहीं डालते मगर उस की बिसात के मुताबिक़, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। **(42)**

और हम ने उन के सीनों से कीने खींच लिए, उन (जन्नतों) के नीचे नहरें बहती हैं, और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें इस की तरफ़ रहनुमाई की, और अगर अल्लाह हमें हिदायत न देता (रहनुमाई न फ़रमाता) तो हम हिदायत पाने वाले न थे। अलबत्ता हमारे रब के रसूल हक़ के साथ आए, और उन्हें निदा दी जाएगी कि तुम इस जन्नत के वारिस बनाए गए (उन आमाल के) सिले में जो तुम करते थे। **(43)**

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ

और इनसान	जिन्नात	से	तुम से क़ब्ल	गुज़र चुकीं	उम्मतों में (हमराह)	तुम दाख़िल हो जाओ	फ़रमाएगा

فِي النَّارِ ۭ كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا

उस में	मिल जाएंगे	जब	यहां तक	अपनी साथी	लानत करेगी	कोई उम्मत	दाख़िल होगी	जब भी	आग (दोज़ख़) में

جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَاۗءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ

पस दे उन को	उन्हों ने हमें गुमराह किया	यह हैं	ऐ हमारे रब	अपने पहलों के बारे में	उन की पिछली क़ौम	कहेगी	सब

عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ڛ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۳۸

38	तुम जानते	नहीं	और लेकिन	दो गुना	हर एक के लिए	फ़रमाएगा	आग का	दो गुना	अ़ज़ाब

وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ

कोई बड़ाई	हम पर	है तुम्हें	पस नहीं	अपने पिछलों को	उन के पहले	और कहेंगे

فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۳۹ ع اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا ع ٨ / ١١

झुटलाया	वह लोग जो	बेशक	39	तुम कमाते थे (करते थे)	उस का बदला	अ़ज़ाब	चखो

بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَاۗءِ وَلَا

और न	आस्मान	दरवाज़े	उन के लिए	न खोले जाएंगे	उन से	और तकब्बुर किया उन्हों ने	हमारी आयतों को

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰي يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ۭ وَكَذٰلِكَ

और इसी तरह	सुई	नाका	में	ऊँट	दाख़िल होजाए	यहां तक (जब तक)	जन्नत	दाख़िल होंगे

نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۴۰ لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۭ

ओढ़ना	उन के ऊपर	और से	बिछौना	जहन्नम का	उन के लिए	40	मुजरिम (जमा)	हम बदला देते हैं

وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۴۱ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग	41	ज़ालिम (जमा)	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ۡ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا

उस में	वह	जन्नत वाले	यही लोग	उस की वुस्अ़त	मगर	किसी पर	हम बोझ नहीं डालते

خٰلِدُوْنَ ۴۲ وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ

से	बहती हैं	कीने	उन के सीने	में	जो	और खींच लिए हम ने	42	हमेशा रहेंगे

تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا

हम थे	और न	इस की तरफ़	हमारी रहनुमाई की	जिस ने	अल्लाह के लिए	तमाम तारीफ़ें	और वह कहेंगे	नहरें	उन के नीचे

لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَاۗءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	हमारा रब	रसूल	आए	अलबत्ता	अल्लाह	कि हमें हिदायत देता	अगर न	कि हम हिदायत पाते

وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۴۳ الثلثة

43	करते थे	तुम थे	सिले में	तुम उस के वारिस होगे	जन्नत	यह कि तुम	कि	और उन्हें निदा दी जाएगी

وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا

हम से वादा किया	जो	तहक़ीक़ हम ने पा लिया	कि	दोज़ख़ वालों को	जन्नत वाले	और पुकारेंगे

رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ

तो पुकारेगा	हाँ	वह कहेंगे	सच्चा	तुम्हारा रब	जो वादा किया	तुम ने पाया	तो क्या	सच्चा	हमारा रब

مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٤﴾ۙ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ

रोकते थे	जो लोग	44	ज़ालिम (जमा)	पर	अल्लाह की लानत	कि	उन के दरमियान	एक पुकारने वाला

وقف لازم

عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

45	काफ़िर (जमा)	आख़िरत के	और वह	कजी	और उस में तलाश करते थे	अल्लाह का रास्ता	से

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا

और पुकारेंगे	उन की पेशानी से	हर एक	पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़	और पर	एक हिजाब	और उन के दरमियान

اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۟ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ﴿٤٦﴾

46	उम्मीदवार हैं	और वह	वह उस में दाख़िल नहीं हुए	तुम पर	सलाम	कि	जन्नत वाले

وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا

हमें न कर	ऐ हमारे रब	कहेंगे	दोज़ख़ वाले	तरफ़	उन की निगाहें	फिरेंगी	और जब

ع ٥ ٨ ١٢

مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ

वह उन्हें पहचान लेंगे	कुछ आदमी	आराफ़ वाले	और पुकारेंगे	47	ज़ालिम (जमा)	लोग	साथ

بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	तुम तकब्बुर करते थे	और जो	तुम्हारा जत्था	तुम्हें	न फ़ाइदा दिया	वह कहेंगे	उन की पेशानी से

اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ بِرَحْمَةٍ ؕ

अपनी कोई रहमत	अल्लाह	उन्हें न पहुँचाएगा	तुम क़सम खाते थे	वह जो कि	क्या अब यह वही

اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَنَادٰٓى

और पुकारेंगे	49	ग़मगीन होगे	तुम	और न	तुम पर	कोई ख़ौफ़	न	जन्नत	तुम दाख़िल हो जाओ

اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا

उस से जो	या	पानी	से	हम पर	बहाओ (पहुँचाओ)	कि	जन्नत वाले	दोज़ख़ वाले

رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ؕ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾ۙ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	50	काफ़िर (जमा)	पर	उसे हराम कर दिया	बेशक अल्लाह	वह कहेंगे	अल्लाह	तुम्हें दिया

اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ

पस आज	दुनिया	ज़िन्दगी	और उन्हें धोके में डाल दिया	और कूद	खेल	अपना दीन	उन्हों ने बना लिया

نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٥١﴾

51	इन्कार करते	हमारी आयतों से	और जैसे-थे	यह-इस	उन का दिन	मिलना	जैसे उन्हों ने भुलाया	हम उन्हें भुलादेंगे

और जन्नत वाले दोज़ख़ वालों को पुकारेंगे कि तहक़ीक़ हम ने पालिया जो हम से वादा किया था हमारे रब ने सच्चा, तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया था क्या तुम ने भी पालिया सच्चा? वह कहेंगे हाँ! तो एक पुकारने वाला पुकारेगा उन के दरमियान कि (उन) ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत। (44)

जो लोग अल्लाह के रास्ते से रोकते थे और उस में कजी तलाश करते थे, और वह आख़िरत के काफ़िर (मुन्किर) थे। (45)

और उन के दरमियान एक हिजाब (पर्दा) है, आराफ़ पर कुछ आदमी होंगे, वह हर एक को उस की पेशानी से पहचान लेंगे, और जन्नत वालों को पुकारेंगे कि सलाम हो तुम पर, वह (आराफ़ वाले) जन्नत में दाख़िल नहीं हुए, और वह उम्मीदवार हैं। (46)

और जब उन की निगाहें फिरेंगी दोज़ख़ वालों की तरफ़ तो कहेंगे ऐ हमारे रब! हमें ज़ालिमों के साथ न कर। (47)

और पुकारेंगे आराफ़ वाले कुछ आदमियों को कि उन्हें उन की पेशानी से पहचान लेंगे, वह कहेंगे तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया तुम्हारे जत्थे ने और जिन पर तुम तकब्बुर करते थे। (48)

क्या अब यह वही लोग नहीं हैं कि तुम क़सम खाया करते थे कि अल्लाह उन्हें अपनी कोई रहमत न पहुँचाएगा, आज उन्हें से कहा गया कि तुम जन्नत में दाख़िल हो जाओ, न तुम पर कोई ख़ौफ़ है न तुम ग़मगीन होगे। (49)

और दोज़ख़ वाले पुकारेंगे जन्नत वालों को कि हम पर (थोड़ा) पानी बहाओ (पहुँचाओ) या उस में से (कुछ) जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है, वह कहेंगे बेशक अल्लाह ने यह काफ़िरों पर हराम कर दिया है। (50)

जिन्हों ने अपने दीन को खेल कूद बना लिया और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें धोके में डाल दिया, पस आज हम उन्हें भुलादेंगे जैसे उन्हों ने (आज के) इस दिन का मिलना फ़रामोश कर दिया था, और जैसे हमारी आयतों से इन्कार करते थे। (51)

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً

और रहमत	हिदायत	इल्म	पर	हम ने उसे तफ़सील से बयान किया	एक किताब	और अलबत्ता हम लाए उन के पास

لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ؕ يَوْمَ يَاْتِىْ

आएगा	जिस दिन	उस का कहना पूरा हो जाए	मगर (यही कि)	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	क्या	52	जो ईमान लाए हैं	लोगों के लिए

تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ

रसूल (जमा)	बेशक लाए	पहले से	उन्हों ने भुला दिया	वह लोग जो	कहेंगे	उस का कहा हुआ

رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ

सो हम करें	या हम लौटाए जाएं	हमारी	कि सिफ़ारिश करें	सिफ़ारिश करने वाले	कोई	हमारे लिए	तो क्या हैं	हक़	हमारा रब

غَيْرَ الَّذِىْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا

जो	उन से	और गुम हो गया	अपनी जानें	बेशक नुक़्सान किया उन्हों ने	हम करते थे	उस के ख़िलाफ़ जो

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٥٣﴾ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ ع ٦ ١٣

आस्मान (जमा)	पैदा किया	वह जो-जिस	अल्लाह	तुम्हारा रब	बेशक	53	वह इफ़्तिरा करते (झूट घड़ते) थे

وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۘ يُغْشِى الَّيْلَ

रात	ढांकता है	अर्श	पर	क़रार फ़रमाया	फिर	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन

النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ

मुसख़्ख़र	और सितारे	और चाँद	और सूरज	दौड़ता हुआ	उस के पीछे आता है	दिन

بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾ اُدْعُوْا

पुकारो	54	तमाम जहान	रब	बरकत वाला है अल्लाह	और हुक्म देना	पैदा करना	उस के लिए	याद रखो	उस का हुक्म

رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۚ وَلَا تُفْسِدُوْا

और न फ़साद मचाओ	55	हद से गुज़रने वाले	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	और आहिस्ता	गिड़ गिड़ा कर	अपने रब को

فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ

अल्लाह की रहमत	बेशक	और उम्मीद रखते	डरते	और उसे पुकारो	उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन में

قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ

हवाएं	भेजता है	जो-जिस	और वह	56	एहसान (नेकी) करने वाले	से	क़रीब

بُشْرًا ۢ بَيْنَ يَدَىْ رَحْمَتِهٖ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا

भारी	बादल	उठा लाएं	जब	यहां तक कि	अपनी रहमत (बारिश)	आगे	बतौरे ख़ुशख़बरी

سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ

से	उस से	फिर हम ने निकाला	पानी	उस से	फिर हम ने उतारा	मुर्दा	किसी शहर की तरफ़	हम ने उन्हें हांक दिया

كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	ग़ौर करो	ताकि तुम	मुर्दे	हम निकालेंगे	इसी तरह	हर फल

और हम उन के पास एक किताब लाए जिसे हम ने तफ़सील से बयान किया इल्म (की बुन्याद) पर ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत। (52)

क्या वह यही इन्तिज़ार कर रहे हैं कि उस का कहा हुआ पूरा हो जाए, जिस दिन उस का कहा हुआ हो जाएगा, तो वह लोग जिन्हों ने उसे पहले भुला दिया था वह कहेंगे, बेशक हमारे रब के रसूल हक़ बात लाए थे, तो क्या हमारे लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफ़ारिश करें, या हम (दुनिया) में लौटाए जाएं कि हम उस के ख़िलाफ़ अ़मल करें जो हम (पहले) करते थे, बेशक उन्हों ने अपनी जानों का (अपना) नुक़्सान किया, और उन से गुम हो गया जो वह झूट घड़ते थे। (53)

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिस ने आस्मानो और ज़मीन छः दिन में बनाए, और फिर क़रार फ़रमाया अ़र्श पर, रात को दिन पर ढांक देता है, उस के पीछे (दिन) दौड़ता हुआ आता है, और सूरज और चाँद और सितारे उस के हुक्म से मुसख़्ख़र हैं, याद रखो उसी के लिए है पैदा करना और हुक्म देना, अल्लाह बरकत वाला है सारे जहानों का रब। (54)

अपने रब को पुकारो गिड़ गिड़ा कर और आहिस्ता से, बेशक वह हद से गुज़रने वालों को दोस्त नहीं रखता। (55)

और फ़साद न मचाओ ज़मीन में उस की इस्लाह के बाद, और उसे पुकारो डरते और उम्मीद रखते हुए, बेशक अल्लाह की रहमत क़रीब है नेकी करने वालों के। (56)

और वही है जो अपनी रहमत (बारिश) से पहले हवाएं बतौरे ख़ुशख़बरी भेजता है, यहां तक कि जब वह भारी बादल उठा लाएं तो हम ने उन्हें किसी मुर्दा शहर की तरफ़ हांक दिया, फिर उस से पानी उतारा (बरसाया) फिर हम ने निकाले उस से हर क़िस्म के फल, इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम ग़ौर करो। (57)

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ

ना पाकीज़ा (ख़राब)	और वह जो	उस का रब	हुक्म से	उस का सबज़ह	निकलता है	पाकीज़ा	और ज़मीन

ع ٥ ١٤ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ۭ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝٥٨

58	वह शुक्र अदा करते हैं	लोगों के लिए	आयतें	फेर फेर कर बयान करते हैं	इसी तरह	नाक़िस	मगर	नहीं निकलता

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا

नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	पस उस ने कहा	उस की क़ौम	तरफ़	नूह (अ)	अलबत्ता हम ने भेजा

لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥٩

59	एक बड़ा दिन	अज़ाब	तुम पर	डरता हूँ	बेशक मैं	उस के सिवा	कोई माबूद	तुम्हारे लिए

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٦٠ قَالَ

उस ने कहा	60	खुली	गुमराही	में	अलबत्ता तुझे देखते हैं	बेशक हम	उस की क़ौम	से	सरदार	बोले

يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦١

61	सारे जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कुछ भी गुमराही	मेरे अन्दर	नहीं	ऐ मेरी क़ौम

اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٢

62	तुम जानते	जो नहीं	अल्लाह (की तरफ़) से	और जानता हूँ	तुम्हें	और नसीहत करता हूँ	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें

اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَاۗءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰي رَجُلٍ مِّنْكُمْ

तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि	क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ

لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٦٣ فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ

तो हम ने उसे बचा लिया	पस उन्हों ने उसे झुटलाया	63	रहम किया जाए	और ताकि तुम पर	और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो	ताकि वह डराए तुम्हें

وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۭ

हमारी आयतें	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	और हम ने ग़र्क़ कर दिया	कश्ती में	उस के साथ	और जो लोग

ع ٦ ٨ ١٥ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ۝٦٤ وَاِلٰي عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۭ قَالَ

उस ने कहा	हूद (अ)	उन के भाई	आद	और तरफ़	64	अन्धे	लोग	थे	बेशक वह

يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٦٥

65	तो क्या तुम नहीं डरते	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं	अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ

में	अलबत्ता हम तुझे देखते हैं	उस की क़ौम	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	सरदार	बोले

سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٦٦ قَالَ يٰقَوْمِ

ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	66	झूटे	से	और हम बेशक तुझे गुमान करते हैं	बेवकूफ़ी

لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦٧

67	तमाम जहान	रब	से	भेजा हुआ	और लेकिन मैं	कोई बेवकूफ़ी	मुझ में	नहीं

और पाकीज़ा ज़मीन से उस का सबज़ह उस के रब के हुक्म से (पाकीज़ा ही) निकलता है, और जो ख़राब है उस से नहीं निकलता मगर नाक़िस, उसी तरह हम शुक्र गुज़ार लोगों के लिए आयतें फेर फेर कर बयान करते हैं। (58)

अलबत्ता हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा, पस उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अज़ाब से। (59)

उस की क़ौम के सरदार बोलेः हम तुझे खुली गुमराही में देखते हैं। (60)

उस ने कहा, ऐ मेरी क़ौम! मेरे अन्दर कुछ भी गुमराही (की बात) नहीं लेकिन मैं भेजा हुआ (रसूल) हूँ सारे जहानों के रब की तरफ़ से। (61)

मैं तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुँचाता हूँ और तुम्हें नसीहत करता हूँ और अल्लाह (की तरफ़) से जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (62)

क्या तुम्हें तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर आई ताकि वह तुम्हें डराए, और ताकि तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो, और ताकि तुम पर रहम किया जाए। (63)

पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो हम ने उसे और उन लोगों को जो कश्ती में उस के साथ थे बचा लिया, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया उन्हें हम ने ग़र्क़ कर दिया, बेशक वह लोग (हक़ शनासी से) अन्धे थे। (64)

और आद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई हूद (अ) को, और उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम डरते नहीं? (65)

उस की क़ौम के काफ़िर सरदार बोले अलबत्ता हम तुझे देखते हैं बेवकूफ़ी में और हम बेशक तुझे झूटों में से गुमान करते हैं। (66)

उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! मुझ में बेवकूफ़ी (की कोई बात) नहीं, लेकिन मैं तमाम जहानों के रब का भेजा हुआ (रसूल) हूँ। (67)

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ﴿٦٨﴾ اَوَعَجِبْتُمْ

क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ	68	अमीन	ख़ैर ख़्वाह	तुम्हारा	और मैं	अपना रब	पैग़ाम (जमा)	मैं तुम्हें पहुँचाता हूँ

اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ

ताकि वह तुम्हें डराए	तुम में से	एक आदमी	पर	तुम्हारा रब	से	नसीहत	तुम्हारे पास आई	कि

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ

और तुम्हें ज़ियादा दिया	क़ौमे नूह	बाद	जांनशीन	उस ने तुम्हें बनाया	जब	और तुम याद करो

فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

69	फ़लाह (कामयाबी) पाओ	ताकि तुम	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	फैलाओ	ख़ल्क़त (जिस्म)	में

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ

पूजते थे	जो-जिस	और हम छोड़ दें	वाहिद (अकेले)	अल्लाह	कि हम इबादत करें	क्या तू हमारे पास आया	वह बोले

اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

70	सच्चे लोग	से	तू है	अगर	जिस का हम से वादा करता है	तो ले आ हम पर	हमारे बाप दादा

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ؕ

और ग़ज़ब	अ़ज़ाब	तुम्हारा रब	से	तुम पर	अलबत्ता पड़ गया	उस ने कहा

اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا

नहीं	और तुम्हारे बाप दादा	तुम	तुम ने उन के रख लिए हैं	नाम (जमा)	में	क्या तुम झगड़ते हो मुझ से

نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

से	तुम्हारे साथ	बेशक मैं	सो तुम इन्तिज़ार करो	सनद	कोई	उस के लिए	अल्लाह ने नाज़िल की

الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا

अपनी	रहमत से	उस के साथ थे	और वह लोग जो	तो हम ने उसे नजात दी (बचा लिया)	71	इन्तिज़ार करने वाले

وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٢﴾ ع ٩ ٨ ١٦

72	ईमान लाने वाले	और न थे	हमारी आयात	उन्हों ने झुटलाया	वह लोग जो	जड़	और हम ने काट दी

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وقف لازم

तुम अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	सालेह (अ)	उन के भाई	समूद	और तरफ़

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ

तुम्हारा रब	से	निशानी	तहक़ीक़ आ चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	माबूद	कोई	तुम्हारे लिए नहीं

هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ

में	कि खाए	सो उसे छोड़ दो	एक निशानी	तुम्हारे लिए	अल्लाह की ऊँटनी	यह

اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٣﴾

73	दर्दनाक	अ़ज़ाब	वरना पकड़ लेगा तुम्हें	बुराई से	उसे हाथ लगाओ	और न	अल्लाह की ज़मीन

मैं तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाता हूँ और मैं तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह, अमीन हूँ। (68)

क्या तुम्हें तअ़ज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास आई तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत तुम में से एक आदमी पर ताकि वह तुम्हें डराए, और तुम याद करो जब उस ने तुम्हें क़ौमे नूह (अ) के बाद जांनशीन बनाया, और तुम्हें ज़ियादा दिया जिस्म में फैलाओ (डेल डोल), सो अल्लाह की नेमतें याद करो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ। (69)

वह बोले, क्या तू हमारे पास इस लिए आया है कि हम अल्लाह वाहिद की इबादत करें और छोड़ दें जिन्हें हमारे बाप दादा पूजते थे, तो ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू सच्चे लोगों में से है। (70)

उस ने कहा अलबत्ता तुम पर तुम्हारे रब की तरफ़ से पड़ गया अ़ज़ाब और ग़ज़ब, क्या तुम मुझ से उन नामों के बारे में झगड़ते हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, नहीं नाज़िल की अल्लाह ने उस के लिए कोई सनद, सो तुम इन्तिज़ार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (71)

तो हम ने उस को बचा लियो और उन को जो उस के साथ थे अपनी रहमत स, और हम ने उन लोगों की जड़ काट दी जिन्हों ने हमारी आयतों को झुटलाया और वह न थे ईमान लाने वाले। (72)

और समूद की तरफ़ (भेजा) उन के भाई सालेह (अ) को, उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, तुम्हरा उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी आ चुकी है, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, सो उसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे बुराई से हाथ न लगाओ वरना तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब पकड़ लेगा। (73)

وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ

और तुम्हें ठिकाना दिया	आ़द	बाद	जांनशीन	तुम्हें बनाया उस ने	जब	और तुम याद करो

فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ

और तराशते हो	महल (जमा)	उस की नर्म जगह	से	बनाते हो	ज़मीन	में

الْجِبَالَ بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَآءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ

ज़मीन (मुल्क) में	और न फिरो	अल्लाह की नेमतें	सो याद करो	मकानात	पहाड़

مُفْسِدِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ

उस की क़ौम	से	तकब्बुर किया (मुतकब्बिर)	वह जिन्हों ने	सरदार	बोले	74	फ़साद करने वाले (फ़साद करते)

لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا

सालेह (अ)	कि	क्या तुम जानते हो	उन से	ईमान लाए	उन से जो	ज़ईफ़ (कमज़ोर) बनाए गए	उन लोगों से

مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	ईमान रखते हैं	उस के साथ भेजा गया	उस पर जो	बेशक हम	उन्हों ने कहा	अपना रब	से	भेजा हुआ

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِیْٓ اٰمَنْتُمْ بِهٖ

तुम ईमान लाए उस पर	वह जिस पर	हम	तकब्बुर किया	वह जिन्हों ने	बोले

كٰفِرُوْنَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ

अपना रब	हुक्म	से	और सरकशी की	ऊँटनी	उन्हों ने कूचें काट दीं	76	कुफ़्र करने वाले (मुन्किर)

وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ

से	तू है	अगर	जिस का तू हम से वादा करता है	ले आ	ऐ सालेह (अ)	और बोले

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٧٧﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِىْ دَارِهِمْ

अपने घर	में	तो रह गए	ज़लज़ला	पस उन्हें आ पकड़ा	77	रसूल (जमा)

جٰثِمِيْنَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ

तहक़ीक़ मैं ने तुम्हें पहुँचा दिया	ऐ मेरी क़ौम	और कहा	उन से	फिर मुँह फेरा	78	औन्धे

رِسَالَةَ رَبِّىْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ﴿٧٩﴾

79	ख़ैर ख़्वाह (जमा)	तुम पसन्द नहीं करते	और लेकिन	तुम्हारी	और ख़ैर ख़्वाही की	अपना रब	पैग़ाम

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ

जो तुम से पहले नहीं की	क्या आते हो बेहयाई के पास (बेहयाई करते हो)	अपनी क़ौम से	कहा	जब	और लूत (अ)

بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ

मर्द (जमा)	जाते हो	बेशक तुम	80	सारे जहान	से	किसी ने	ऐसी

شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ﴿٨١﴾

81	हद से गुज़र जाने वाले	लोग	तुम	बल्कि	औरतें	अ़लावा (छोड़ कर)	शहवत से

और याद करो जब तुम्हें आ़द के बाद जांनशीन बनाया और तुम्हें ज़मीन में ठिकाना दिया, बनाते हो उस की नर्म जगह में महल और तराशते हो पहाड़ों के मकानात, सो अल्लाह की नेमतें याद करो, और मुल्क में फ़साद मचाते न फिरो। (74)

सरदार बोले उन की क़ौम के जो मुतकब्बिर थे, उन ग़रीब लोगों से जो उन में से ईमान ला चुके थे: क्या तुम जानते हो कि सालेह (अ) अपने रब की तरफ़ से भेजा हुआ है (रसूल है), उन्हों ने कहा बेशक वह जो कुछ दे कर भेजा गया है हम उस पर ईमान रखते हैं। (75)

वह जिन्हों ने तकब्बुर किया (सरदार) बोले तुम जिस पर ईमान लाए हो हम उस के मुन्किर हैं। (76)

उन्हों ने ऊँटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले ऐ सालेह (अ)! ले आ जिस का तू हम से वादा करता है (धमकाता है) अगर तू रसूलों में से है। (77)

पस ज़लज़ले ने उन्हें आ पकड़ा तो अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए। (78)

फिर (सालहे (अ) ने उन से मुँह फेरा और कहा ऐ मेरी क़ौम! मैं ने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचाया और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की, लेकिन तुम ख़ैर ख़्वाहों को पसन्द नहीं करते। (79)

लूत (अ) (को भेजा) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम वह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले सारे जहान में किसी ने नहीं की। (80)

बेशक तुम मर्दों के पास शहवत से जाते हो औ़रतों को छोड़ कर, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो। (81)

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْهُمْ

उन्हें निकाल दो	उन्हों ने कहा	यह कि	मगर	उस की क़ौम	जवाब	था	और न

مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنٰهُ

हम ने नजात दी उस को	82	पाकीज़गी चाहते हैं	यह लोग	बेशक	अपनी बस्ती	से

وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿٨٣﴾ وَاَمْطَرْنَا

और हम ने बारिश बरसाई	83	पीछे रहने वाले	से	वह थी	उस की बीवी	मगर	और उस के घर वाले

عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٨٤﴾ ع ١٠ ١٢ ١٧

84	मुजरिमीन	अन्जाम	हुआ	कैसा हुआ	पस देखो	एक बारिश	उन पर

وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۭ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ

अल्लाह की इबादत करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	शुऐब (अ)	उन के भाई	मदयन	और तरफ़

مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ

से	एक दलील	तहक़ीक़ पहुँच चुकी तुम्हारे पास	उस के सिवा	कोई माबूद	से	नहीं तुम्हारा

رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ

लोग	और न घटाओ	और तोल	नाप	पस पूरा करो	तुम्हारा रब

اَشْيَاۗءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۭ

उस की इस्लाह	बाद	ज़मीन (मुल्क) में	फ़साद मचाओ	और न	उन की अशिया

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٨٥﴾ ۚ وَلَا تَقْعُدُوْا

बैठो	और न	85	ईमान वाले	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह

بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	और तुम रोको	तुम डराओ	रास्ता	हर

مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ كُنْتُمْ

तुम थे	जब	और याद करो	कजी	और ढूँडो उस में	उस पर	ईमान लाया	जो

قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ۡ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	और देखो	तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया	थोड़े

الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَاۗىِٕفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا

ईमान लाया	तुम से	एक गिरोह	है	और अगर	86	फ़साद करने वाले

بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَاۗىِٕفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا

तुम सब्र कर लो	ईमान नहीं लाया	और एक गिरोह	जिस के साथ	मैं भेजा गया	उस पर जो

حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87	फ़ैसला करने वाला	बेहतर	और वह	हमारे दरमियान	फ़ैसला कर दे अल्लाह	यहां तक कि

और उस की क़ौम का जवाब न था मगर यह कि उन्हों ने कहाः उन्हें (लूत (अ) को) अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग पाकीज़गी चाहते हैं। (82)

सो हम ने नजात दी उस को और उस के घर वालों को सिवाए उस की बीवी के जो पीछे रह जाने वालों में से थी। (83)

और हम ने उन पर (पत्थरों की) एक बारिश बरसाई, पस देखो मुजरिमों का कैसा अन्जाम हुआ? (84)

और हम नें मदयन की तरफ़ उन के भाई शुऐब (अ) (को भेजा), उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम! अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तहक़ीक़ तुम्हारे पास एक दलील पहुँच चुकी है तुम्हारे रब (की तरफ़) से, पस नाप और तोल पूरा करो और लोगों की अशिया न घटाओ, (घटा कर न दो) और मुल्क में इस्लाह के बाद फ़साद न (मचाओ), तुम्हारे लिए यह बेहतर है अगर तुम ईमान वाले हो। (85)

और हर रास्ते पर न बैठो कि तुम (राहगीरों को) डराओ और उसे अल्लाह के रास्ते से रोको जो उस पर ईमान लाया, और उस में कजी ढूँडो, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो उस ने तुम्हें बढ़ा दिया, और देखो! फ़साद करने वालों का अन्जाम कैसा हुआ? (86)

और अगर तुम में एक गिरोह है जो उस पर ईमान लाया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ और एक गिरोह (है जो) ईमान नहीं लाया तो तुम सब्र करो यहां तक कि फ़ैसला कर दे अल्लाह हमारे दरमियान, और वह बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। (87)